गोटु

A contemporary calligraphic display typeface, Gotu is simple yet elegant. With distinctly wide open loops, circular counters and delicate curves, it is ideal for invitations, event posters and publications.

Designed by:
Sarang Kulkarni

To download source files please visit:
https://github.com/EkType/Gotu/releases

To download font, please visit:
www.ektype.in

Ek Type

www.ektype.in

अआइईउऊऋॠऌॡऍऎएऐॲ
ऑऒओऔॳअकखगघङछ।।
जझञटठडढणडथदधनपफब
भमयरलळवशषसह।क़ऱख़ग़
ज़ड़ढ़फ़य़०१२३४५६७८९५८ॐ
₹।।श्रक्ककटक्दख्मख्यग्धज्झ
घ्नच्नङ्मन्सब्धम्यह्लभ्शक़ष्क
ष्यस्कस्जस्थस्वस्सह्णह्नह्मह्वह्य
क़्बऱ्तख़्यख़्शज़्यज़्ज़फ़्तफ़्जश्ट
क्स्प्लग्लत्लफ्लभ्लक्लत्प्लक्ष्ल
0123456789!"#$%'()[]*+,-.
/:;<=>?''""•{}_|£¤¥™©®€₹

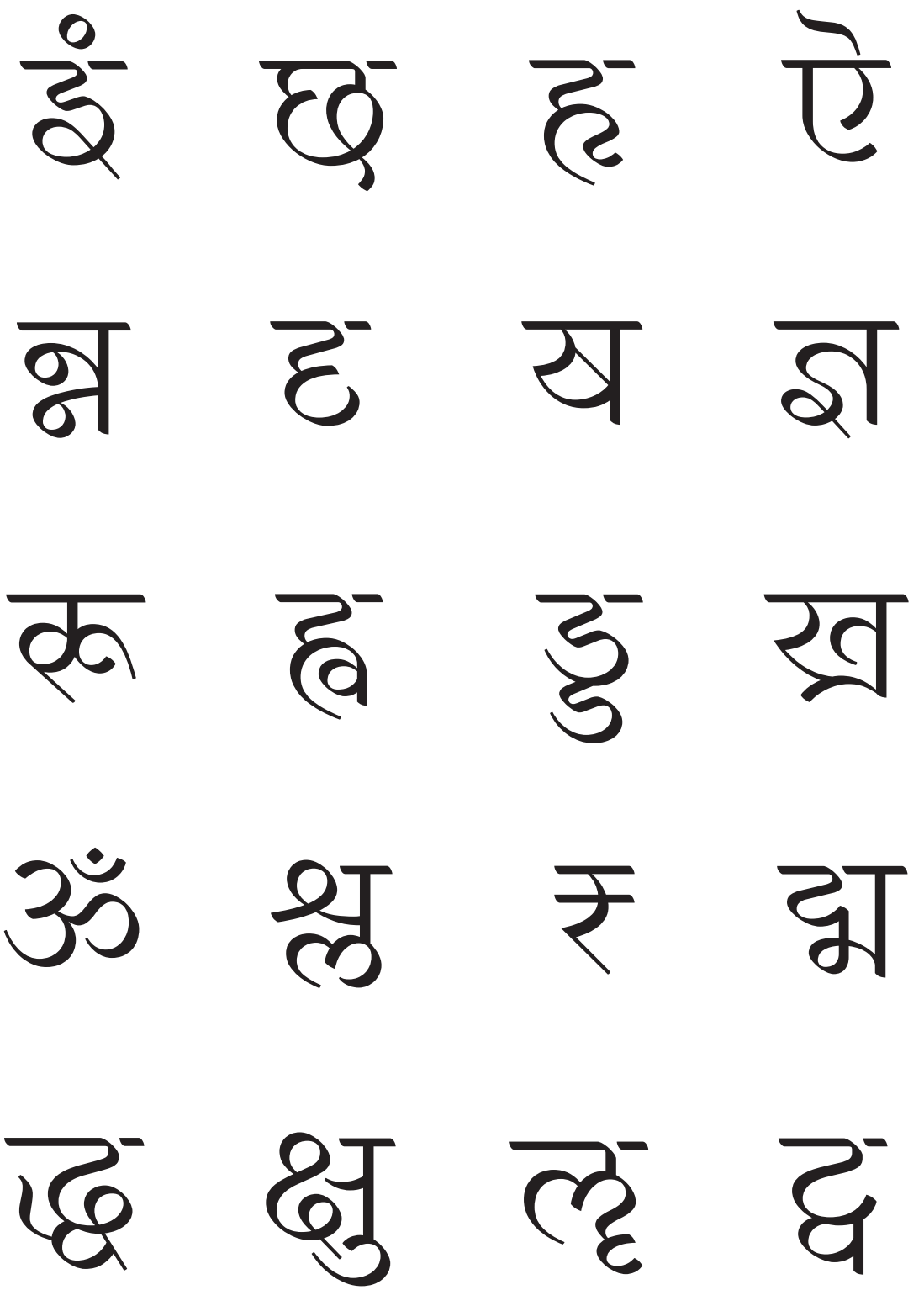

ड्ं छ्र ह्र ऐ

ञ ह ष ड्ग

ऋ ह्व ड्ड स्त्र

ॐ श्ल ₹ ध्म

द्ध क्षु ल्ह द्व

14/22 PT Gotu

महाभारत में दुष्यन्त शकुन्तला के रूप पर मुग्ध होकर शकुन्तला से गांधर्व विवाह की प्रार्थना करता है; जिस पर शकुन्तला कहती है कि मैं विवाह इस शर्त पर कर सकती हूं कि राजसिंहासन मेरे पुत्र को ही मिले। दुष्यन्त उस समय तो स्वीकार कर लेता है और बाद में अपनी राजधानी में लौटकर जान-बूझकर लज्जावश शकुन्तला को ग्रहण नहीं करता। कालिदास ने इस प्रकार अपरिष्कृत रूप में प्राप्त हुई कथा

18/29 PT Gotu

महाभारत में दुष्यन्त शकुन्तला के रूप पर मुग्ध होकर शकुन्तला से गांधर्व विवाह की प्रार्थना करता है; जिस पर शकुन्तला कहती है कि मैं विवाह इस शर्त पर कर सकती हूं कि राजसिंहासन मेरे पुत्र को ही मिले। दुष्यन्त उस समय तो स्वीकार कर लेता है और बाद में

21/33 PT Gotu

महाभारत में दुष्यन्त शकुन्तला के रूप पर मुग्ध होकर शकुन्तला से गांधर्व विवाह की प्रार्थना करता है; जिस पर शकुन्तला कहती है कि मैं विवाह इस शर्त पर कर सकती हूं कि राजसिंहासन मेरे पुत्र को ही मिले। दुष्यन्त उस

आरोह-अवरोह

१२, हवेली आज़म खाँ, जामा मस्जिद, दिल्ली.

काजवा

चूल्हा मिट्टी का, मिट्टी तालाब की

लहराता पत्ता

काजूची बुटकबैंगण झाडं, करवंदीच्या जाळ्या, रातांबे नि जामाची झाडं. हापूस-पायरी-रायवळ-माणकुराद आंब्यांची कैक झाडं. आंबा पिकून जाळीत पडल्याचा आवाज आल्यावर, भावंडांबरोबर शर्यत लावायची अन् ज्याला प्रथम सापडेल त्याने तो खायचा. - नंदन

देखा, आसान था ना!

आनन्द और आनन्द

मिलट्री सेंसर ऑफिस से नवकेतन फ़िल्मस, जानिएं देव आनंद साहब का रोमांचक सफर

१९४९ में देव आनंद ने अपनी एक फिल्म कम्पनी बनाई, जिसका नाम 'नवकेतन' रखा गया, इस तरह अब वो फिल्म निर्माता बन गए!

धर्मदेव आनंद, जो की देव आनन्द के नाम से प्रसिद्ध थे, का जन्म २६ सितम्बर १९२३ में गुरदास पुर (जो अब नारोवाल जिला, पकिस्तान में है) में हुआ. उन्होंने गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। देव आनंद के भाई, चेतन आनंद और विजय आनंद भी भारतीय सिनेमा में सफल निर्देशक थे। उनकी बहन शील कांता कपूर प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक शेखर कपूर की माँ है।देव आनंद काम की तलाश में मुंबई आये और उन्होंने मिलट्री सेंसर ऑफिस में १६० रुपये प्रति माह के वेतन पर काम की शुरुआत की! शीघ्र ही उन्हें प्रभात टाकीज़ एक फिल्म हम एक हैं में काम करने का मौका मिला! और पूना में शूटिंग के वक़्त उनकी दोस्ती अपने ज़माने के सुपर स्टार गुरु दत्त से हो गयी! कुछ समय बाद अशोक कुमार के द्वारा उन्हें एक फिल्म में बड़ा ब्रेक मिला! उन्हें बॉम्बे टाकीज़ प्रोडक्शन की फिल्म ज़िद्दी में मुख्य भूमिका प्राप्त हुई और इस फिल्म में उनकी सहकारा थीं कामिनी कौशल, ये फिल्म १९४८ में रिलीज़ हुई और सफल भी हुई! इसके बाद जो भी देव साहब नें कुछ भूमिकाएं निभाई जो कुछ नकरात्मक शेड लिए थीं! जब राज कपूर की आवारा पर्दर्शित हुई, तभी देव आनंद की राही और आंधियां भी प्रदर्शित हुईं!

Akhanda Conjuncts

न्+स्+म्+य्=न्स्म्य

त्+ख्+न्=त्ख्न

Multiple Prebase mātrās

रि मि ळि ज्मि

फ्कि ज्वि स्क्वि

Multiple Postbase mātrās

ही री ठी क्ती

Language Alternates

शलाका १५३८

शलाका १५३८